मिथिलाक लोकगीत

लोक गीतक विशेषताक सम्बन्धमे डॉ॰ अमरनाथ झा 'मैथिली लोकगीतक भूमिका' मे लिखैत छथि-''लोक गीतक विशेषता ई अछि जे एहिमे हृदयक वास्तविक उद्‌गार रहैत अछि तेँ ई हृदयग्राही होइत अछि । एहिमे प्राकृतिक सभ वस्तुक चर्चा रहैत अछि संगहि हमर परम्परा, संस्कार, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, प्राचीनताक संग हमर दुख-सुख आदिक चित्रात्मक वर्णन सेहो भेटैत अछि'' ।

आजुक मुद्रित स्वरूपमे विद्यमान लोकगीतक मूल उत्स बड़ प्राचीन अछि जे पीढ़ी दर पीढ़ी कंठान्तरित भऽ लोकानुरंजनक संग-संग अपन परम्परा, संस्कारक जीवंत साक्ष्य तँ अछिए, मनुष्यक रागात्मक अभिव्यक्तिक प्रतीक सेहो । लोकगीतमे गेयात्मकता होइत अछि जाहि कारणेँ ई श्रुति मधुर होइत अछि । चरणक पुनरावृतिसँ एकर मधुरता आओर बढ़ि जाइत अछि ।

लोकगीतक क्षेत्र जन्मसँ मृत्युपर्यन्त देखल जाइत अछि । मानव मात्र जाहिसँ सरोकार रखैत छथि ओ सभ लोकगीतक परिधिमे अबैत अछि । एहि गीतक माध्यमसँ हमरा लोकनि अपन वेदनाकेँ विस्मृत करैत छी, आराधना ओ उपासना करैत छी, संगहि विभिन्न सामाजिक अवसर पर लोक चेतना जगबैत छी । ई गीत गयबाक परम्परा हमरा लोकनि पूर्वहि कालसँ देखैत छी खाहे कृष्णक जन्म हो, रामक जन्म हो, रामक विवाहादि संस्कार हो, राजसूय यज्ञ हो वा अश्वमेध यज्ञ । हर्षोल्लासक अवसर पर हृदयक उद्‌गार लोक गीतक माध्यमे व्यक्त होइत अछि । मृत्युक अवसर पर लोकगीत गयबाक परम्परा नहि अछि । मुदा कबीर पंथीमे मृत्युक अवसर पर निर्गुण गयबाक परम्परा देखल जाइत अछि ।

मिथिलाञ्चलमे प्रचलित लोकगीतक वर्गीकरण निम्न रूपेँ कयल जा सकैत अछि–

धार्मिक गीत– मिथिलाक विभिन्न अवसर ओ मांगलिक कार्यमे गीत गाओल जाइत अछि आ भक्त अपन हार्दिक उद्‌गार व्यक्त करैत छथि । एकर दू रूप होइत अछि–**सगुण** आ **निर्गुण** । मिथिलामे सगुण उपासना पद्धति बेसी प्रचलित अछि । कबीर पंथीए टामे निर्गुण भक्ति परम्परा देखल जाइत अछि । निर्गुणमे संसारक क्षणभंगुरता आ नीतिपरक गीत गाओल जाइत अछि ।

सगुण गीत– गोसाउनिक गीत, नचारी, महेशवाणी, कीर्तन, विष्णुपद, पराती, सांझ, गंगाक गीत, शीतलाक गीत आदि ।

निर्गुण गीत– ब्रह्मक गीत, गुरुक गीत आदि ।

उपर्युक्त दूनू कोटिमे वर्गीकृत प्रमुख गीत सभक रेखांकन तँ प्रस्तुत अछिए । एकर अतिरिक्त मिथिलामे प्रचलित संस्कार गीत एवं अन्य प्रकारक गीत सभक उल्लेख कयल जायत ।

1. गोसाउनिक गीत – देवी भगवती, दुर्गा, काली, कुलदेवी आदिसँ सम्बद्ध गीत मिथिलाञ्चलमे गोसाउनिक गीतक रूपमे प्रशस्त अछि । निम्नलिखित उदाहरणमे भक्त हृदयक विह्वलता ओ आत्मनिवेदन द्रष्टव्य अछि–

मइया काली हे हरिअउ सकल जंजाल
सबके जे देलियै मइया अनधन लछमी
हमरा के दरिद्र कंगाल । मइया.....
सबके जे देलियै मइया चारि पदारथ,
हमरा के घुरियो ने ताक ।। मइया...

नचारी-

शिव विषयक गीत 'नचारी' आन सभ तरहक गीतमे प्रसिद्ध गीत मानल जाइत अछि । नचारी गबैत-गबैत भक्त लोकनि आत्मविभोर भऽ जाइत छथि । एहि गीतमे शिव भक्त अपन दीनता-हीनता गरीबी, असहायपन आदि शिवक समक्ष प्रदर्शित करैत छथि । द्रष्टव्य अछि एकर उदाहरण-

कहलो ने जाइछइ भोला विपति के हाल
भोला विपति के हाल
माय-बाप धऽ गेल फिकिर जंजाल
नारी बिन घर भेलइ नरक समान
भोला विपति के हाल
एकटा पुतर छिका तिनि जेहन काल
राजा नगर से तँ देलनि निकाल
रोजी पुँजी छीन लेलनि घर धन माल
वन-वन ढीलु शिव नामी कंगाल ।

महेशवानी-

महेशवानी शिव-पार्वती विषयक ओहन गीत थिक जाहिमे दुनू गोटेक वैवाहिक जीवन, शिवक विचित्र रूप, भूत-प्रेत बराती, भांग धतूरक भोजन आदिक विवरण भेटैत अछि । एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि-

वर देखि सबके लागल टकाटक
विधि ककरो ने सक ।

पाँच मुख तीन नेत्र आगि भकाभक

चन्द्रमा ललाट शोभे गंगा झकाझक ।

केओ जान मोट डाँर केओ लकालक

भूत पिशाच देखि सखी लटापट

विधि..... ।

कीर्तन- शिव-शक्तिक प्रति आस्था रखनिहार मिथिलावांसी भगवान विष्णुकेँ सेहो नहि बिसरैत छथि । एहि ठाम दसो अवतार एवं दसो महाविद्या सभक समाने रूपसँ पूजा कयल जाइत अछि । खाहे ओ राधा-कृष्ण होथि, हनुमान होथि वा सिद्धिदाता गणेश- सभक पूजाक रीति-विधान भने भिन्न-भिन्न हो । विष्णु अवतार रामक वन्दना करैत एकटा भक्त लिखैत छथि-

विनती सुनू नाथ कोशिल्या कुमार हे,

भवसागरके नदिया जल अगम अपार हे ।

बूड़ि रहल नैया नाथ लियऽ ने उबारि हे,

कियो नहि संगी साथी, अपन पराड़ हे,

हमरो सिनेहिया के होइछनि विचार हे,

सीताराम रटैत रही होयत बेड़ा पार हे ।

मिथिलामे कीर्तन-भजनक एक टा परम्परा जकाँ अछि । प्रायः प्रत्येक गाममे एकटा ने एकटा ठाकुरवारी अवश्य भेटत, नहि तँ शिव मंदिर । समय-समय अष्टजाम, नवाह आदि होइते रहैत अछि । एहि अवसर पर कीर्तन मंडलीक झालि, ढोल, हारमुनियम आदि वाद्य यंत्र लऽ कीर्तन करैत रहैत छथि । खाहे राम विवाहक अवसर हो, शिवरात्रि हो वा झूला । एहि अवसर पर राम-सीता,

राधा-कृष्ण, शिव-पार्वतीक प्रेम सम्बन्धी कीर्तन गबैत छथि आ दर्शक लोकनि सेहो संग दैत छथि ।

मिथिलामे शालीग्राम पूजाक सेहो अलग महत्त्व अछि । कोनो शुभ कार्यक पूर्तिक उपरान्त खुशीसँ लोक सत्यनारायण भगवानक पूजा करैत छथि तथा कथा सुनैत छथि । एहि अवसर पर सेहो गीत गाइन सभ नाना प्रकारक विष्णु सम्बन्धी पद गबैत छथि ।

गाय गोबर मँगायब, ओहिसे आँगन लिपायब जुगल जोड़ी
आहे राम सियाहे, जुगल जोड़ी ।
ओहि पर चौका बैसायब, युगल जोड़ी ।
माणिक थंभ मँगायब, ओहि से मंडप बनायब,
ओहिपर पुरोहितके बैसायब, ओहिपर कलश धरायब
गाय दूध मँगायब, ओहिमे केरा मिलायब,
मोहन भोग बनायब, जुगल जोड़ी ।

पराती– पुरुष-स्त्री द्वारा ब्राह्म मुहूर्तमे उठि भगवानक स्मरणक क्रममे गाओल गीतकेँ पराती कहल जाइत अछि । एहि समयमे शिव-पार्वती, राम-कृष्ण तथा गंगा मैयाक स्मरण कयल जाइत अछि । भक्त अपन दुखकेँ उक्त देवी-देवताकेँ कहैत छथि तथा अपन नैराश्य जीवनमे सुखक अनुभूति हो तकर कामना करैत छथि । द्रष्टव्य थिक–

कखन हरब दुख मोर हे भोला नाथ,
कखन हरब दुख मोर.....
दुखहि जनम लेल, दुखहि गमाओल,

सुख सपनहुँ नहि देल हे भोला नाथ ।

सुख सपनहुँ नहि देल ।

उक्त गीत गबैत-गबैत भक्त आत्म विह्वल ओ विभोर भऽ जाइत छथि । कखनो काल आँखिसँ नोर सेहो झहरय लगैत छनि ।

साँझ- मिथिलाक नारी साँझमे तुलसीक पूजा करबामे अटूट विश्वास रखैत छथि । अखण्ड सौभाग्यक कामना करैत साँझ गबैत छथि संगहि वृन्दा जकाँ पतिव्रता बनि सकी तकर कामना करैत छथि । एहि गीतमे नारी अपन सुहाग आ पतिक कल्याणक कामना अधिक करैत छथि-

साँझ दीअ साँझ दीअ जसुमति मैया,

कथी केर दीप कथी केर बाती

कथी केर तेल जरय सगर राती,

सोना केर दीप पाटय सुत बाती,

सरिसों के तेल जरय सगर राती

जरय लागल दीप, झुमकय लागल बाती,

खेलय लागल संझामाई, चारू पहर राती ।

ब्रह्मक गीत- ब्रह्म, गामक देवता होइत छथि । सम्पूर्ण गामक लोक सभ तरहेँ सुखी-सम्पन्न ओ निर्विघ्न पूर्वक रहय तकर पूर्ण उत्तरदायित्व मानू हिनके (ब्रह्मक) रहैत छनि । ग्राम देवता (ब्रह्मकेँ) विभिन्न नामसँ विभिन्न स्थान पर जानल जाइत छथि । कतहु हिनका ब्रह्म तँ कतहु डिहवार, तँ कतहु ठाकुर आ कतहु भैरव कहल जाइत छनि । गामक प्रारम्भमे हिनकर माटिक पिंड बना पूजा कयल जाइत अछि । कोनो मांगलिक काजमे पहिने कुलदेवी आ तकरा बाद गामक

देवता ब्रह्मक पूजा कयल जाइत अछि ।

अहींके भरोसे ब्राह्मण इहो जग ठानलौं यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।
आइ देलियै कुपन्थ चढ़ाय यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।।
बँसबा कटिते ब्राह्मण भेलइ कुबेर यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।
गहबर बन्हिते भेल साँझ यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।।
गंगाजल भेटिते ब्राह्मण भेलै दुपहरिया यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।
गहबर निपितें भेलइ साँझ यौ अहाँ ब्राह्मण बाबू ।।

निर्गुणक गीत - आत्मा-परमात्मामे अभेद्य सम्बन्ध होइछ । परमात्माक अंश आत्मा होइछ जे जीवमे विराजमान रहैत अछि- जीवित अवस्थामे । प्राण-पखेरू उड़लाक बाद शरीर शव भऽ जाइत अछि ।

हें रे बड़ रे जतन सँ सुग्गा एक पोसल,
माखन दुधवा पिलाय ।
हँ रे ये हो सुगवा विरिछिया चढ़ि बैसल,
पिंजरा के धरती लोटाय,
कहनासे हंसा आओल, कहमा समाओल हो राम ।
कि आहो रामा हो, कोने गढ़ कयल मोकाम कवन लपटल हो राम
सुरपुर से हंसा आओल, नरपुर समाओल हो राम,
कि आहो राम हो, काया गढ़ कएल मोकाम,
मायाहि लपटाओल हो राम ।

उक्त विवरण सभसँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मिथिलामे धार्मिक गीतक माध्यमे अनेक देवी-देवताक उपासना-आराधना कयल जाइत अछि । अपन वेदना सुना कऽ भगवानकेँ प्रसन्न करबाक चेष्टा कयल जाइत अछि संगहि आधि-व्याधिसँ मुक्तिक वास्ते सेहो तत्जन्य देवताक आराधनाक विधान देखबामे अबैछ । भगवानक आराधनेसँ हमरा लोकनिक जीवनमे नाना प्रकारक सुख-समृद्धि आबि सकैत अछि एहन मान्यता अछि ।

संस्कार-गीत– मिथिलांचलमे एहन मान्यता अछि जे कोनो प्रकारक सुख वा दुख ईश्वरक प्रसादात अछि । गर्भाधानसँ लऽ कऽ मृत्युपर्यन्त जे कोनो प्रकारक क्रिया-प्रक्रिया होइत अछि सभ दैवी कृपासँ जुड़ल अछि । एहि वास्ते देवी-देवताक आराधना करब आवश्यक अछि । तेँ मनुक्खक जन्म, मुंडन, उपनयन, विवाह आदि कोनो प्रकारक संस्कारक समय गाओल गेल गीतकेँ संस्कार गीत कहैत छी । एहि ठाम मात्र पाँच प्रकारक संस्कार-गीतक चर्चा कयल जायत ।

(क) जन्म-संस्कारक गीत (ख) मुंडन-संस्कारक गीत

(ग) उपनयन-संस्कारक गीत (घ) विवाह-संस्कारक गीत

(ङ) मृत्यु-संस्कारक गीत

जन्म-संस्कारक गीत

बच्चाक जन्मक अवसर पर सोहर गयबाक प्रचलन अछि । सोहर खुशीक गीत होइत अछि । मिथिलामे राम ओ कृष्णक आधार मानि सोहरक रचना कयल गेल अछि-

नंद घर डंका बाजय, सुख उपजाबय रे ललना
जनमल श्री यदुनाथ कि नयन जुरायल रे

आयल उबटन तेल, ककहिया, काजर रे ललना
होरिला लहुरबा के दूध हुलसि पिआयब रे
लहरत लाल पटोर पहिनि, घर जायब रे ललना
नृत्य करय नटनागरि सब गुन आगरि रे
बाजूबन्द बेसरि पैजनी रुनझुन बाजय रे ललना
अंकम पुलकि लगाय कि पलना झलायब रे
लेब निछावर नंद जी सौँ हैत गज रथमणि रे ललना ।
केओ सुपारी पान कि सुवरनक बेसरि रे ।

जन्म संस्कारक अवसर पर गाओल जायवला सोहर अनेक प्रकार होइत अछि जकर चर्चा करब अपेक्षित नहि ।

(ख) **मुंडन-संस्कारक गीत-** मुंडन वा मुड़नमे जन्मौटी बच्चाकेँ पहिलबेर केश कटाओल जाइत अछि । केश कटयबाक विधान छुरासँ नहि कैंचीसँ अछि । एहि अवसर पर मिथिलामे देवताक गीतक संग पितरक गीत सेहो गाओल जाइत अछि–

कोने बाबा छुरिया गढ़ाओल आओर गढ़ाओल हे ।
कोने आमा लेल जनम केश, कि होरिला के मूड़न हे ।
फलाँ बाबा छुरिया गढ़ाओल कि सोना सँ गढ़ाओल हे ।
फलाँ आमा लेल जनम केश कि होरिला के मूड़न हे ।
नहूँ-नहूँ छुरिया चलबिहे रे हजमा
कि होरिलाजी के ने लागय हो,

आमा खोंइछा मे लेलनि पुरइन पात

कि दुभि धान कि शुभ-शुभ केस लेलनि हे ।

(ग) उपनयन-संस्कारक गीत

उपनयन संस्कारक प्रारम्भ उदोगसँ होइत अछि आओर अंत टीक रखायबसँ । एहि संस्कारक क्रम– उदोग, मड़बठट्ठी, माटिमांगर, चरखकट्टी, हाँसू नोतब, कुमरम, उपनयन, रातिम आ अंतमे टीक रखायब अछि । उपर्युक्त सभ अवसर पर नानाप्रकारक गीत-अनुष्ठानिक गीत, मांगलिक गीत आ विविध गीत गाओल जयबाक विधान अछि ।

(घ) विवाह-संस्कार गीत–

विवाह संस्कार जीवनक अंतिम संस्कारसँ ठीक पहिनेक संस्कार होइत अछि । तेँ लोक एकरा पूर्ण हर्षोल्लाससँ मनबैत छथि । ब्रह्मचर्याश्रमक घोर तपस्यासँ तप्त देहकेँ आनन्द निमज्जित करबाक लेल, संगहि वंशवृद्धिक लालसासँ विवाह संस्कार कराओल जाइत अछि । विवाह गृहास्थाश्रमक प्रमाण पत्र थिक । ओना विवाह तँ, दुइए-तीन घंटामे पूर्ण भऽ जाइत अछि मुदा एकर विधि सालो भरि चलैत रहैत अछि । तेँ कहल गेल अछि–"विवाहसँ विधि भारी" । एहि संस्कारक पूर्णता वर पक्ष ओ 'वधू' पक्षक सम्मेलनसँ होइत अछि । वर-कनियाँ दुनूक मिलन होइछ तँ दुनूठाम मांगलिक, अनुष्ठानिक वा विविध गीत गाओल जयबाक परम्परा अछि । वरक ओहिठाम चुमानसँ लऽ कऽ सिरहर भरब, आ द्विरागमनक पश्चात् भरफोरी धरि अनेकानेक अवसर पर विविध प्रकारक गीत गाओल जाइत अछि । तहिना वधू पक्षमे परिछनक गीतसँ लऽ कऽ कन्याक विदाइ धरि अनेक अवसर अबैत अछि, विधि होइत अछि आ ततजन्य गीत गाओल जाइत अछि । एकर अतिरिक्त किछु एहन गीत अछि जकरा दुनू पक्ष गबैत छथि

जेना–पसाहिन चुमान तथा दुआरि छेकाइ सम्बन्धी गीत । ई उभय पक्षीय गीत दुनू ठाम गाओल जाइत अछि । सभ अवसर परक गीतक उल्लेख करब दुष्कर मुदा किछु बानगी–

अपनहि रामचन्द्र चलला वियाहन हे शुभ बाजन बाजे ।
मुख सोभे पाकल पान हे शुभ बाजन बाजे ।
कए लाख साजल हाथी ओ घोड़ा हे शुभ बाजन बाजे ।।
कए लाख साजल बरियात हे शुभ बाजन बाजे ।।
नौ लाख साजल हाथी ओ घोड़ा हे शुभ बाजन बाजे ।।
तीस लाख साजल बरियात हे शुभ बाजन बाजे ।।
सब बरियतिया जनकपुर पहुँचल हे शुभबाजन बाजे ।।
सीता के होयत विआह हे शुभ बाजन बाजे ।।
भेल विआह राम चलु शुभ कोबर हे शुभ बाजन बाजे ।
सीता लियऽ अंगुरी धराय हे शुभ बाजन बाजे ।।

महादेवक विवाहक संदर्भमे गाओल गेल परिछन सेहो देखल जा सकैत अछि–

सखी हे कोना कऽ परिछब गिरिजाक भँगिया वर के ना ।
होइए हमरा डर गे ना ।।
परिछय सखी सहेली चलली वर के देखितहि दूर परयली ना ।
होइए हमरा डर गे ना ।।
सखी हे वर देहमे सोहरल साँप छै ना ।

होइए हमरा डर गे ना ।।

सखी हे वर के गरमे मुण्डक माला छै ना ।

होइए हमरा डर गे ना ।।

सखी हे सिर पर जटा विराजनि बीच सुरसरि छनि बड़ पावन ना ।

होइए हमरा डर गे ना ।।

सखी हे भालचन्द्र विराजय नीलकंठ छनि नाम गे ना ।

होइए हमरा डर गे ना ।।

सखी हे चलि के आदर स्वागत करियनु वरकेँ परिछि लबियनु ना ।

होइए हमरा डर गे ना ।।

विवाहक उपरान्त वर-कन्याक मिलन स्थल (गृह) कोबर कहबैत अछि । चारि दिन धरि नव दम्पति एहि घरमे रहैत छथि । एहि ठाम अनेक प्रकारक विधि सम्पन्न कराओल जाइत अछि संगहि वर-वधूक मधुर मिलन जन्म गीत गाओल जाइत अछि-

सिया रघुवर यौ अहाँ बिनु कोबर उदास ।

काँचहि बाँस केर ये हो नव कोबर ।।

सिया रघुवर यौ अहाँ बिनु कोवर उदास ।

चारू दिश लागल छै केबाड़ ।।

ताहि कोवर सुतय गेल दुलहा ।

दुलहा संग दुलहिन सुकुमारि ।

सिया रघुवर यौ अहाँ बिनु कोवर उदास ।

युगे-युगे जीवथु दुलहा ।

दुलहिनकेँ बढ़ौन एहिबात ।

सिया रघुवर यौ अहाँ बिनु कोबर उदास ।।

उचती, मिनती, योग, डहकन, उदासी, समदाउन आदि गीत गयबाक विधान देखल गेल अछि-विभिन्न अवसर पर । जखन बेटीक विदागरी-द्विरागमन अवसर खास कऽ, होइत अछि ताहि काल जे गीत गाओल जाइत अछि ओ बेसी मर्मस्पर्शी होइत अछि । उपस्थित जनसमुदायक आँखि अश्रुपूरित भऽ जाइत अछि-

बर रे यतनसँ सीताजीके पोसलहुँ

सेहो रघुवंशी नेने जाय ।

मिलि लिय मिलि लिय सखि सब मिलि लिय,

सीता बेटी जइति ससुरारि ।

कथि केर डोलिया केहेन ओहरिया,

लागि गेल बतिसो कहार ।

चाननक डोलिया सबजि ओहरिया,

लागि गेल बतिसो कहार ।

आगू-आगू रघुवर पाछू-पाछू डोलिया,

तकरा पाछू लछुमन भाय ।

विदाइ अपना-आपमे करुण दृश्य उपस्थित कऽ दैत अछि ताहू पर गीत गाबिकऽ सखी समुदाय आर हृदयविदारक वातावरण बना दैत छथि । एहन करुणार्द्र क्षण भऽ जाइत अछि जे विदेह जनक सेहो सीताक विदाइक अवसर पर धैर्यविहीन भऽ गेल रहथि ।

मृत्यु-संस्कार गीत

मनुक्खक जीवन लीला समाप्त होयब अवश्यंभावी थिक । एहि मृत्यु भुवनमे जे आयल अछि ओकर अंत अवश्य होइछ । इएह एहि संसारक नियम अछि एहि समयमे आनो आन लोकक हृदय विदीर्ण भऽ जाइछ तेँ रुदन स्वाभाविके भऽ जाइत अछि ।

कबीर पंथी लोकनि मृत्युकेँ अनिवार्यता ओ मानव जीवनकेँ क्षणभंगुर कहैत गबैत छथि–

प्राण परम मोरा हृदय कठोर भेल,

अँखिया झामर मोरा भेल,

अँखिया झामर मोरा भेल हे गोरियाँ,

जबे जम आयल दुआर ।

अँचरा झाँपथि गोदी सुलाबथि

तैयो जम झपटि लेल ।

आरे मति आरे बाँझके जनम दिअ,

कोखि मिरतू नीको नई भेल ।

उपर्युक्त विभिन्न संस्कार गीतक अतिरिक्त ऋतुगीत, फगुआक गीत, चैतावर, वसंत, पावस गीत, झूलाक गीत, मलार, बारहमासा, छौ मासा तथा चौमासा आदि लोकगीत सेहो एतय गाओल जाइत अछि ।

फगुआक गीत मुख्यतः कृष्ण–गोपी (राधा) तथा सीता–राम पर आश्रित कऽ बनाओल आ गाओल जाइत अछि–

होली खेले राम जनकपुरमे, होली खेले ।

किनका हाथ कनक पिचकारी किनका हाथ अबीर झोली.....

बारह मासा गीत ओना बारहो मास गाओल जा सकैत अछि मुदा एकर आरम्भ प्रायः अषाढ़ वा चैतसँ होइत अछि । एहि गीतक सम्बन्ध शिव-पार्वती, राम-सीता, अथवा कृष्ण-राधासँ रहैत अछि । दाम्पत्य जीवनक सुख-दुख, संयोग-वियोग, प्राकृतिक उद्दीपनक संग सरस-मधुर भावेँ अभिव्यक्त कयल गेल रहैछ–

प्रथम मास अषाढ़ हे सखी साजि चलल जलधार यो ।

वारि वयस विदेश वालम करब कौन प्रकार यो ।

सावन रिमझिम बूँद बरिसत पिया बसथि बरि दूर यो ।

पिया पिया के रटत पपीहा जंगल बोलत मोर यो ।

भादव जल थल नदी उमड़ि गेल चहुदिशि श्यामा श्याम यो ।

आसिन हे सखी आश लगाओल आशो ने पुरल हमार यो ।

प्रीति कारण सेतु बान्हल सिया उदेश श्री राम यो ।

मिथिलामे पावनि-तिहारक कमी नहि अछि । एहन कोनो मास नहि अछि जाहिमे कोनो ने कोनो पावनि नहि रहैत हो । कखनो तँ पावनिक ताँता लागि जाइत अछि, खास कऽ आश्विनसँ फागुन धरि अनेक तरहक पावनि होइत अछि । एकर अतिरिक्त मधुश्रावणी, नाग पंचमी, छठि, तुसारी, बरसाइत आदि विशेष स्थान रखैत अछि जाहिमे मैथिल ललनामे एक नव प्रकारक उमंग ओ उल्लास रहैत छनि । नव विवाहित दम्पतिक प्रेम-बंधन, विश्वास ओ सहनशीलता प्रदर्शित करबाक पर्व थिक मधुश्रावणी । एहि अवसर पर पूजा अर्चनाक संग गीत गाओल जाइत अछि ।

बरसाइत, वट सावित्रीक अपभ्रंश थिक । जनश्रुति अछि जे जेठ अमावश्याकेँ

वट वृक्षक नीचाँ बैसि कऽ पूजा कयलासँ नव विवाहिता अखण्ड सौभाग्यवती होइत छथि, जेना-सावित्री । नव विवाहिता पूर्ण शृंगार कऽ वरक गाछक नीचाँ बैसैत छथि आ ओकर पूजा करैत छथि-गीत गबैत छथि ।

व्यवसाय गीतक अंतर्गत लगनी, गोदनाक गीत, चरखाक गीत, चाँचर आदि श्रम निवारणार्थ गाओल गेल गीत एहि श्रेणीमे अबैत अछि । जाँतसँ गहुम, चाउर वा कोनो अन्न पीसबामे परिश्रम लगैत अछि । परिश्रमक बोध स्त्रीकेँ नहि होइक तेँ गीत गाबि मोनकेँ परिश्रमसँ बहटारबाक वास्ते गबैत छथि । एहि ठाम जाँत चलौनिहारि दू स्त्री मिलि गीत गबैत छथि, बेसी स्त्री समूहक प्रयोजन लगनीमे नहि होइत छैक । एहि गीतक स्वरूप किछु लम्बा सेहो होइत अछि मुदा अधिकांशतः चारि-पाँच अवतरणक होइछ ।

चरखाक गीत सेहो व्यवसायक गीतक अन्तर्गत अबैत अछि । स्वतंत्रतासँ पूर्व गाँधी जीक आह्वान पर चरखा काटबाक परम्परा जकाँ भऽ गेल छल आ एकरा व्यवसायसँ जोड़ि देल गेल । संगहि स्वतंत्रता आन्दोलनमे एकर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका भऽ गेल छल जकरा लघु उद्योगक दर्जा एखनो अछि । कतिन सभ सूत काटि बेचैत छलि ओ ओकरा रुपैया भेटैत छलैक । मुदा मिथिलांचलमे ओहूसँ पहिने चरखा काटबाक चलन छल । ओहि सूतसँ यज्ञोपबीत बनाकऽ पहिरल जाइत अछि । मिथिलाक नारी चरखाक ध्वनिक संग अपन ध्वनि मिला कऽ रागात्मक ध्वनिसँ गीत गबैत छथि ।

विविध गीत - एखन धरि विभिन्न अवसर पर गाओल गेल विशिष्ट गीतक चर्चा कयल गेल अछि । एकर अतिरिक्त मिथिलामे किछु विविध विषयक गीत सेहो गाओल जाइत अछि जेना झिझियाक गीत, झररीक गीत, झूमर गीत आदि ।

आश्विन मासक दुर्गापूजाक अवसर पर तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, डाइन-योगिन आदिक चर्चा बेसी होइत रहैत अछि । अष्टमी ओ नवमीक रातिमे जादू-टोना, तंत्र-मंत्र सिद्धि करबाक समय होइत अछि । डाइन-योगिन गाममे कोनो प्रकारक अनिष्ट नहि कऽ सकय, ताहि वास्ते किछु जातिक स्त्री झिझिया खेलाइत आ गीत गबैत छथि । एक टा घैलमे अनेको छेद कऽ देल जाइत अछि । प्रज्वलित दीप ताहिमे राखि देल जाइछ । ओहि घैलकेँ माथ पर राखि स्त्रीक समूह गीत गबैत गामक परिक्रमा करैत छथि ।

श्यामा-चकेवा– मिथिलामे बड़ प्रसिद्ध अछि श्यामा-चकेवा । छठिक बाद शुक्ल पक्षमे एकर प्रारम्भ होइत अछि आ पूर्णिमाक दिन एहि खेलक समापन । भाइ-बहिनक ई खेल मिथिलांचलक प्रसिद्ध खेलमे जानल जाइत अछि । ओना आब प्राय: लुप्त-प्राये जकाँ भेल जा रहल अछि । ई खेल रातिमे खेलल जाइत अछि-सभ तरहक गृह कार्य सम्पन्न कयलाक बाद महिला मंडली गबैत छथि ।

शिशुगीत :

अटकन-मटकन

बाबी, माय, बहीन वा आन कोनो सम्बन्धी बच्चा सभक परिबोधन हेतु गीत गबैत छथि आ ओकर मोन बहटारैत छथि-

अटकन-मटकन, दहिया चटखन,
माघ मास करैला फूले
ओइ करेलाक नाम की ?
अमुआ गोटी जमुआ गोटी

तेतरी सोहाग गोटी

बाँस काटे ठाँइ ठाँइ, नदी गुँगुआय
कमलक फूल दुनू अलगल जाय,
जेठी रानी छोटी गेली नहाय
पयरक बिछिया गेलन हेराए ।

अट्टा पट्टा-

बच्चाकेँ खेलयबाक दोसर सबसँ प्रचलित गीत अछि-अट्टा पट्टा । द्रष्टव्य-

अट्टा-पट्टा बौआके सात टा बेटा,
एक टा गेल गायमे,
एक टा बड़दमे, एक टा हाथीमे
एक टा बकरीमे आ एक टा.....

एतेक कहैत बच्चाकेँ हाथसँ लऽ कऽ बाँहि ओ काँख धरि आँगुर लऽजा कऽ गुदगुदी लगाओल जाइत अछि पुनः कंठ प्रदेशमे गुदगुदी लगयलासँ बच्चा खिलखिलाकऽ हँसऽ लगैत अछि आ खेलौनिहारकेँ सेहो प्रसन्नता होइत छनि ।

एकर अतिरिक्त बच्चा सभकेँ लोरी गाबि-गाबि सुताओल जाइत अछि, सेहो एही गीतक अन्तर्गत अबैत अछि, जेना-

आरे चन्दा मामा, आरे आ....
रस कुसियार ला,
केरा केर भार ला,
दही मटकूर ला,
फोंका मखान ला,
लाल पटिया ला,
बौआकेर मुँहमे घुटुर.....

एतेक सुनैत बच्चा सभ प्रसन्न भऽ जाइत अछि आ बारम्बार एहन गीत सुनबाक आकांक्षा रहैत छैक ।

घुघुआ मना-

घुघुआ मना, उपजे घना,
के के खाय दूध भतवा,
बौआ खाय दूध भतवा
आबै छो रे पतवा,
मारतउ दू लतवा ।
नव घर उठे पुरान घर खसे....

उक्त गीत गौनिहारि चित भऽ सूति रहैत छथि आ बच्चाकेँ अपन दुनू पयर पर राखि कऽ हिलबैत रहैत छथि वा उपर-नीचाँ करैत गीत गबैत रहैत छथि । गीत समाप्त भेलाक बाद एकाएक उपर उठाकऽ पुनः नीचाँ लऽ आनैत छथि । नीचाँ अबिते बच्चा खिलखिला कऽ हँसऽ लगैत अछि जखन ओ कहैत छथिन– नव घर उठय, पुरान घर खसय ।

जट-जटिन

आश्विन-कार्तिक मासक ठहा-ठही इजोरिया रातिमे जट-जटिनक अभिनय युक्त गीत बहुत कर्णप्रिय लगैत अछि । ई गीत प्रश्नोत्तर शैलीमे गाओल जाइत अछि । अभिनय कर्ताक दू पक्ष होइत अछि । दुनू पक्षक पक्षधर महिलाक टोली होइत अछि । दुनू पक्ष एक दोसराक उत्तर-प्रत्युत्तर गाबिकऽ दैत अछि । द्रष्टव्य अछि जट-जटिनक विवाह प्रसंगक प्रेम गीत–

नवहिं पड़तउ हे जटिन
नवहि पड़तउ हे
जइसेँ नवतइ धानक शिशबा

तइसेँ नवबे हे
नहिए नवबउ रे जटवा
नहिंए नवबउ रे
बाबूक दुलारी बेटी
ऐंठिक चलबउ रे ।

प्रश्नोत्तर शैलीमे गाओल गेल गीत मनोरंजक लगैत अछि । विवाहोत्तर जट, जटिनसँ झुकय हेतु शर्त रखैत अछि मुदा जटिनकेँ कोनो रूपेँ स्वीकार्य नहि । नारी स्वातंत्र्य पर आघात जटिन बर्दास्त नहि करऽ चाहैत अछि जे स्वाभाविके अछि । पशु-पक्षी पर्यन्त स्वतंत्र रहबाक आदी होइत अछि, परतंत्रता कोनहुना स्वीकार योग्य नहि थिक ।

आजुक वैज्ञानिक युगमे अनेक प्रकारक मनोरंजनक साधन उपलब्ध अछि आ लोको नव-नव रूपेँ मनोरंजन करबाक अभ्यासी भेल जा रहल छथि, तकर एकमात्र कारण अछिं समयाभाव । औद्योगिक विकासक प्रतियोगितामे मनुक्खक आवश्यकताक सीमा अनन्त भेल जा रहल अछि । तहिना मनोरंजनक साधन- टी.वी., रेडियो, भी.सी.डी., सिनेमा, पॉप म्यूजिक आदि सेहो भऽ गेल अछि । एहि प्रतिस्पर्धामे ग्रामीण लोक-गीतक दशा-दिशा केहन होयत से विचारणीय अछि ।

तखन एतेक बात अवश्य जे नव जीवन पद्धति, नव सभ्यता-संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, शहरीकरण आदिं कतबो विकसित भऽ जाओ मुदा ग्रामीण महिलाक कंठमे समाहित लोकगीत जखन सस्वर मुखरित होइत अछि, तखन नवका सभ किछु भर-भराकऽ धाराशायी भऽ जाइत अछि आ लोकक कान अनायासहि ओहि गीतक प्रति आकर्षित भऽ जाइत अछि । तखन एतेक बात अवश्य जे ई कहिया धरि रहत आ कोन स्वरूपे रहत, कहब कठिन ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लोकगीत ककरा कहैत छी ?
2. लोक गीतकेँ श्रुत किएक कहल गेल अछि ।
3. नचारी आ महेशवानीमे की अन्तर थिक लिखू ।
4. 'परिछन' कोन अवसरक गीत होइत अछि?
5. भक्तिगीत कोन तरहक गीतकेँ कहल जाइत अछि ?
6. निर्गुण आ सगुण भक्ति ककरा कहैत छी ?मिथिलामे कोन तरहक भक्ति परम्परा बेसी प्रचलित अछि ?
7. कबीर साहेब निर्गुण भक्ति परम्पराक प्रबल गायक छथि, हिनक कोनो एक निर्गुण गीतकेँ लिखू ।
8. विवाह सम्बन्धी कोनो एक गोट गीत लिखू ।

◆◆◆